

अध्याय

VIII

निष्कर्ष और सिफारिशें

8.1 निष्कर्ष

8.1.1 भेल, भारत की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग और निर्माण कम्पनी है, जो विद्युत तथा अर्थव्यवस्था के अन्य बुनियादी क्षेत्रों के लिए उत्पाद और सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला के डिजाइन, अभियांत्रिकी, उत्पादन, निर्माण, परीक्षण, संस्थापन और शोधन कार्य में अनुरक्त है। 2012-17 की अवधि के लिए अपनी नीतिगत योजना बनाते समय, भेल द्वारा यह निर्धारित (नवम्बर 2011) किया गया कि उसके व्यवसाय वातावरण में निश्चित बदलाव आयेगा। भेल द्वारा यह स्वीकार किया गया कि 2010 को समाप्त पिछले दशक ने उसके सामने जलवायु परिवर्तन, नए प्रतिद्वंद्वियों के उभरने से प्रतियोगिता की प्रबलता में बढ़ोतरी तथा कम डिलवरी समय जैसी चुनौतियाँ प्रस्तुत की। व्यापार वातावरण में इन चुनौतियों की पहचान करके भेल द्वारा विविधता और नवीनता पर ध्यान केंद्रित करके 2012-17 की अवधि के लिए नीतिगत योजना बनाई गई है। भेल के समक्ष केवल अपने बुनियादी व्यवसाय को सुरक्षित रखने की ही चुनौती नहीं थी वरन उसे सुरक्षा, सौर, वायु, और जल व्यवसाय जैसे विविध क्षेत्रों पर भी ध्यान केंद्रित करना था और निर्बाध विकास के प्रयास के लिए आरएंडडी को भी शामिल करना था। लेखापरीक्षा द्वारा यह देखा गया कि विविधीकरण और नवीकरण के लिए भेल द्वारा किए गए प्रयास अपर्याप्त थे और पहचान किए गए क्षेत्रों बुनियादी विद्युत क्षेत्र में तकनीकी कमी को पूरा करने, नवीकरण और आधुनिकीकरण, भारतीय रेल परियोजनाएं, सौर उर्जा आदि में भेल द्वारा प्रगति नहीं की जा सकी। अनुसंधान और विकास की पहल भी वांछित परिणाम नहीं ला सकी। बुनियादी विद्युत क्षेत्र में, परियोजना के अनुमोदन में अत्यधिक विलंब के कारण संयंत्र की कार्य क्षमता बढ़ाने और कोयले की खपत तथा सीओ₂ उत्सर्जन कम करने के लिए एडवांस्ट अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल टेक्नॉलॉजी की ओर उठाये गए कदमों से वांछित परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सके।

8.1.2 बुनियादी व्यापार क्षेत्र में भेल की प्रतिस्पर्धात्मकता चिंता का क्षेत्र रहा है क्योंकि प्रतिद्वंद्वियों के प्रति इसकी सफलता दर 2013-14 में 80.44 प्रतिशत से 2014-15 में 43.95 प्रतिशत तथा 2015-16 में शून्य प्रतिशत तक कम हुई है। लेखापरीक्षा में ठेके प्राप्त न होने का जब विश्लेषण किया गया तो कीमत तथा तकनीकी/वाणिज्यिक लोडिंग ठेके न मिलने के प्रमुख कारणों के रूप में सामने आए, जिनके कारण 85.29 प्रतिशत ऑर्डर (कीमत के संदर्भ में) प्राप्त नहीं हुए थे। भेल की उत्पादन इकाईयों/क्षेत्रीय अधिकारियों द्वारा बोली लगाने के लिए प्रयुक्त लागत जानकारी वास्तविक स्थिति नहीं दर्शाती थी। वस्तुतः भेल द्वारा अप्राप्त ठेको में बताई गई कीमतों में सुधार किया जा सकता था, जिससे प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हो सकती थी। लेखापरीक्षा द्वारा यह देखा गया कि कीमत निर्धारण के समय पर बाजार स्तर कीमतें, प्रयोग नहीं की गई, यद्यपि उत्पादन इकाईयों को इनकी जानकारी दे दी गई थी।

8.1.3 चालू तथा आरंभ की गई परियोजनाओं दोनों के क्रियान्वयन में अत्यधिक विलंब देखा गया। नये प्रारंभ की गई परियोजनाओं में, चयनित 53 परियोजनाओं में से 37 में निर्णीत हर्जानों के प्रति ग्राहकों द्वारा ₹1966.07 करोड़ रोके गए। भेल पारंपरिक रूप से गुणवत्ता के मामले में अपने प्रतिद्वंदियों से आगे रहता है। तथापि, लेखापरीक्षा द्वारा परियोजना क्रियान्वयन के सभी स्तरों निर्माण, संस्थापन और प्रचालन स्तर पर गुणवत्ता/कार्य कुशलता से संबंधित मुद्दे देखे गए। लेखापरीक्षा द्वारा समीक्षा के लिए चयनित नमूना परियोजनाओं में पुनर्निर्माण के लिए त्रिची और हरिद्वार इकाई द्वारा ₹ 138.44 करोड़ का व्यय किया गया। भेल को ई- खरीद लक्ष्य प्राप्ति में सफलता प्राप्त नहीं हुई तथा अपने विक्रेता आधार में संवर्धन करने में भी असफलता हाथ लगी। संयंत्र पैकेजों के बैलेंस के अवार्ड की भाँति प्रस्तुत इंडेंट के प्रति क्रय में विलंब किया गया।

8.1.4 एक ओर स्वस्थ नकद प्रवाह और दूसरी ओर अशोध्य ऋण को परिवर्जित करने के लिए प्राप्तियों का प्रबंधन आवश्यक है। तथापि, लेखापरीक्षा द्वारा यह देखा गया कि इस संबंध में भेल का प्रदर्शन प्रभावशाली नहीं है। औसत वसूली अवधि (संग्रहणीय, आस्थगित, उपचित देयको) के लिए 2011-12 में 251 दिनों से बढ़कर 2015-16 में 588 दिन हो गई। इसके परिणामस्वरूप इस अवधि (2011-16) के दौरान बकाया राशि ₹ 38586 करोड़ से ₹ 42886 करोड़ तक बढ़ गई और टर्नओवर में 46.30 प्रतिशत की गिरावट आई। संग्रहणीय ऋण जो तीन वर्षों से अधिक से बकाया है निष्पादन लेखापरीक्षा की अवधि के दौरान तेजी से बढ़े जो दर्शाता है कि ऋण वसूली प्रभावी नहीं थी।

8.1.5 प्राप्य राशियों के प्रबंधन के विश्लेषण से पता चला कि एल सी की स्थापना के बिना निजी डिवेलपरो की परियोजनाओं में माल की आपूर्ति तथा कई परियोजनाओं को 'ऑन होल्ड' उदघोषित करने के कारण, ऐसी परियोजनाओं के प्रति भेल की बकाया देयताएं इकट्ठी होकर ₹ 2660.77 करोड़ तक जा पहुंची जबकि भेल की विभिन्न इकाईयों की माल सूची ₹ 458.51 करोड़ तक रही। अक्टूबर 2016 तक अवरूद्ध निधियों में बकाया देयताओं और माल सूची के कारण भेल को ₹ 1099.56 करोड़ के ब्याज की हानि हुई। लेखापरीक्षा ने देखा कि जहां कुछ परियोजनाएं 'ऑन होल्ड' पर डाल दी गई थी, उनके लिए भेल की उत्पादन इकाईयो द्वारा माल की खरीद, उत्पादन और उपस्करों की आपूर्ति जारी रखी गई। लेखापरीखा ने देखा कि संस्थापन परियोजनाओं के निष्पादन गारंटी जांच पूर्ण करने और बकाया पंच पॉइंट में अपेक्षाकृत अधिक विलंब किया गया। निष्पादन लेखापरीक्षा की अवधि के दौरान संस्थापित ताप विद्युत परियोजना की 52 इकाईयों में से 18 इकाईयों के निष्पादन गारंटी जांच 50 महिनो से अधिक समय तक की देरी से हुई। 34 ताप इकाईयों के संबंध में निष्पादन गारंटी जांच अभी भी पूर्ण की जानी शेष थी, यद्यपि उनके संस्थापन को (जुलाई 2016 तक) दो से 70 महिनो का समय बीत चुका है।


8.1.6 लेखापरीक्षा ने यह भी देखा कि प्राप्त राशियों की निगरानी प्रभावहीन रही। 17 पुरानी परियोजनाओं में ₹ 515 करोड़ की राशि की वसूली अभी (31 मार्च 2016) तक की जानी शेष थी। राज्य विद्युत बोर्ड से बढ़ते हुए प्राप्य राशियों के शोधन के लिए गठित की गई राज्य वार कार्यदल लक्ष्य तिथियों तक बकाया देयकों का शोधन नहीं कर पाए तथा 31 मार्च 2016 तक ₹ 2388.10 करोड़ (01 फरवरी 2014 तक बकाया देयकों का 91.69 प्रतिशत) बकाया ही रहा।

8.2 सिफारिशें

- (i) भेल आरएंडडी प्रारंभ कर अपने स्वयं के उत्पाद विकसित करे ताकि वह अपने प्रतिद्वंदियों से आगे निकल सके। नए व्यवसायिक क्षेत्रों में तकनीकी गठबंधन विकसित करने के लिए शीघ्र प्रयास करें।
- (ii) भेल की यूनिटों के बीच प्रक्रियागत और प्रणालीगत सुधार और बेहतर समन्वय के लिए 'वन भेल' ईआरपी प्रणाली शीघ्र कार्यान्वित करें।
- (iii) भेल को खुली निविदा प्रणाली के माध्यम से अधिक आदेशों को अन्तिम रूप देने की आवश्यकता है। क्रय मांगपत्र से क्रय आदेश का चक्र समय कम किया जाए ताकि प्रतिस्पर्धात्मकता और इनपूटों की समय पर अधिप्राप्ति सुनिश्चित की जा सके।
- (iv) ग्राहक सर्वेक्षण के दौरान यथा अभिज्ञात और इस संबंध में गठित कार्य बलों की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिस्पर्धियों की तुलना में अपने कमजोर क्षेत्रों को दूर करने के लिए निर्धारित समय सीमा के अन्दर भेल द्वारा कार्य योजनाओं को विकसित करने और कार्यान्वित किए जाने की आवश्यकता है;
- (v) भेल विनिर्माण यूनिटों और विक्रेता कार्यों दोनों के गुणवत्ता नियंत्रण को और अधिक प्रभावी बनाए ताकि संस्थापन और वारंटी अवधि के दौरान उपकरणों की विफलता से बचा जा सके।
- (vi) भेल के वित्तीय हित की सुरक्षा के लिए, विशेष रूप से निजी पार्टियों को प्रेषण लेटर आफ क्रेडिट की स्थापना के प्रति करें। निष्पादन गारंटी जांच की पूर्णता संस्थापन के तुरन्त बाद और बकाया पंच प्वाइंट की समाप्ति समयबद्ध तरीके से उपभोक्ताओं के साथ गहन समन्वय से करना सुनिश्चित करें।
- (vii) राजस्व बिलिंग और ऋणी प्रबन्धन प्रणाली को मजबूत करने और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है ताकि समय पर बिलिंग और राजस्व संग्रहण सुनिश्चित किया जा सके।

मंत्रालय ने कहा (मई 2017) कि सीएजी की सिफारिशों को आवश्यक कार्रवाई करने हेतु नोट कर लिया गया है।


नई दिल्ली
दिनांक : 10 जुलाई 2017


(नन्द किशोर)

उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक
एवं अध्यक्ष, लेखापरीक्षा बोर्ड

प्रतिहस्ताक्षरित

नई दिल्ली
दिनांक : 11 जुलाई 2017


(शशि कान्त शर्मा)

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक

